International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-01-2026, Accepted: 27-02-2026, Published: 14-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 230-232

आधुनिक हिंदी कहानी: स्रोत, स्वरूप और प्रथम मौलिक कहानी पर विमर्श

डॉ. एम. शाबान खान
हिंदी अध्यापक, हार्वेस्ट इंटरनेशनल स्कूल बेंगलुरु, कर्णाटक, भारत

सारांश
हिंदी कहानी के उद्भव को लेकर साहित्य जगत में लंबे समय से विवाद रहा है कि इसका मूल स्रोत भारतीय कथा–परंपरा है या इसका विकास पश्चिमी 'शार्ट स्टोरी' के प्रभाव से हुआ। प्रस्तुत शोध लेख में हिंदी कहानी की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, जातक कथाओं तथा संस्कृत कथा–साहित्य की परंपरा का विवेचन करते हुए यह देखा गया है कि इन ग्रंथों में कथात्मक तत्त्व तो विद्यमान हैं, परंतु आधुनिक कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ नहीं मिलतीं। आगे चलकर बंगला 'गल्प' और अंग्रेज़ी 'शार्ट स्टोरी' के प्रभाव से हिंदी में आधुनिक कहानी विधा के विकास का विश्लेषण किया गया है। साथ ही हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों के विभिन्न मतों—'रानी केतकी की कहानी', 'इंदुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय', 'दुलाईवाली', 'एक टोकरी भर मिट्टी' और 'उसने कहा था'—का तुलनात्मक परीक्षण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष उभरता है कि आधुनिक हिंदी कहानी का स्वरूप पश्चिमी प्रभाव से निर्मित हुआ, जबकि भारतीय कथा–परंपरा ने उसकी पृष्ठभूमि तैयार की।

मूल शब्दः हिंदी कहानी, उद्भव–विवाद, कथा–परंपरा, शार्ट स्टोरी, बंगला गल्प, प्रथम मौलिक कहानी, आधुनिक शिल्प, कथा–साहित्य

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाओं में कहानी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक युग में कहानी ने न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम प्राप्त किया, बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और यथार्थपरक संवेदनाओं को भी प्रभावी रूप से व्यक्त किया। हिंदी कहानी के उद्भव को लेकर विद्वानों के मध्य दो प्रमुख मत प्रचलित रहे हैं। एक मत के अनुसार हिंदी कहानी भारतीय कथा, आख्यायिका और प्रबंध परंपरा का विकसित रूप है, जबकि दूसरा मत इसे पश्चिमी 'शार्ट स्टोरी' और बंगला 'गल्प' के प्रभाव की देन मानता है।

भारतीय वाङ्मय में कथा तत्त्वों की समृद्ध परंपरा रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, जातक कथाएँ तथा संस्कृत कथा–संग्रह कथात्मकता के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, किंतु आधुनिक कहानी के शिल्प, संरचना, मनोवैज्ञानिक गहराई और एकात्मक प्रभाव की दृष्टि से ये रचनाएँ भिन्न स्वरूप की हैं। आधुनिक हिंदी कहानी का सुव्यवस्थित विकास पत्र–पत्रिकाओं, विशेषतः 'सरस्वती' के प्रकाशन काल से आरंभ होता दिखाई देता है, जहाँ पश्चिमी कहानी–शिल्प के अनुरूप लघु कथाएँ प्रकाशित होने लगीं।

प्रथम हिंदी कहानी को लेकर भी मतैक्य नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग रचनाओं को प्रथम कहानी माना है। इस शोध लेख में इन सभी मतों का परीक्षण करते हुए हिंदी कहानी के वास्तविक उद्भव और विकास को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

हिंदी कहानी का उद्भव पश्चिमी प्रभाव से हुआ या फिर यहाँ की आख्यायिका का विकसित रूप ही हिंदी कहानी है, इस पर वाद–विवाद रहा है। लेकिन अब अधिकांशतः यही माना जाता है कि बंगला के गल्प और पश्चिम की 'शार्ट स्टोरी' की तर्ज पर ही आधुनिक हिंदी कहानी विकसित हुई है। फिर भी जो लोग लकीर पीटते रहे हैं कि कहानी की परंपरा हमारे यहाँ पहले से मौजूद थी और उसका ही विकसित रूप आज की कहानी है तो इसी बात पर हम आते हैं। इस बात की पड़ताल करने के लिए हम ज़रा पुराने दौर का रुख़ करते हैं। कथात्मक तत्त्वों से पूर्ण साहित्य हमारे यहाँ मौजूद था। उसका रूप धर्मग्रंथ, प्रबंधकाव्य, कथा, आख्यायिका इत्यादि का था। इसलिए कहानी भारतीय वाङ्मय की देन है या पश्चिम की है, इसके लिए बीते वक्त में जाना ज़रूरी हो जाता है। भारत में कथा के तत्त्व वेद, उपनिषद, पुराण और जातक कथाओं में भी मिलते हैं। यहाँ तक कि संस्कृत में स्वतंत्र कथा ग्रंथ भी मिलते हैं। वेद आध्यात्मिक ग्रंथ है और उसमें सूक्त के रूप में दो या तीन लोगों की आपसी वार्तालाप या कथोपकथन भी मिलते हैं। इसके साथ ही देवी–देवताओं से सम्बंधित आख्यान भी मिलते हैं जैसे– अपाला की कथा। इसी तरह उपनिषद् में भी बहुत–सी कथाएँ या आख्यान मिलते हैं। परंतु ये कथाएँ या आख्यान कोई स्वतंत्र रूप में नहीं मिलती हैं बल्कि धर्म की महिमा आदि के अवसर पर इन्हें उद्धृत किया गया है जिनमें कहानी के तत्त्व की अपेक्षा घटना या प्रसंग मात्र की चर्चा हुई है। इस विषय में सुरेश सिनहा का कथन है– ''लेकिन ये कथाएँ कथा साहित्य की दृष्टि से नहीं आई हैं, वरन् उपनिषदों के भिन्न–भिन्न प्रतिपाद्य तत्त्वों को लेकर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की गयी है।''[1] उपनिषद् के बाद पौराणिक कथाओं में भी कथा तत्त्व ही मिलते हैं कहानी के तत्त्व नहीं मिलते। इनका उद्देश्य साहित्यिक या मनोरंजक न होकर केवल देवी–देवताओं की महिमा मंडन करना मात्र था। इसकी अपेक्षा जातक कथाएँ अपने पूर्ववर्ती कथाओं से अधिक प्रौढ़ और कलात्मक हैं। संभवतः परवर्ती कथा साहित्य इन जातक कथाओं से प्रभावित था। लक्ष्मीनारायण लाल का मानना है कि– ''एक बात से एक स्वतंत्र कथा का जन्म, और उस कथा से अन्य कथा का जन्म होने की कला संभवतः इन्हीं जातक कथाओं से आरंभ हुई तथा कला की चरम सीमा हमें आगे चलकर संस्कृत के सुप्रसिद्ध कथा–संग्रह ''कथा सरित्सागर'' और पंचतंत्र में मिलता है।''[2] स्वतंत्र कथा के रूप में संस्कृत साहित्य में 'वृहत्कथा', 'पंचतंत्र', 'वृहत्कथा मंजरी', 'कथा सरित्सागर', 'वैताल पंचविशतिका, 'शुक सप्तति', 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' तथा 'हितोपदेश' प्रमुख हैं। ये कथाएँ शिक्षा एवं नीति प्रधान हैं। परंतु इन कथाओं का शिल्प और टेकनीक आज की आधुनिक कहानी से भिन्न है। साथ ही साथ ये कथाएँ गद्य काव्य में रचित हैं– ''परंतु ये काव्य ग्रंथ कथा और उपन्यास की अपेक्षा गद्य काव्य अधिक और कथा कम हैं।''[3] अधिकांशतः विद्वान मानते हैं कि संस्कृत की ये कथाएँ ही आधुनिक कहानी विधा की पृष्ठभूमि है। शिवदान सिंह चौहान 'कहानी' विधा को नई विधा नहीं मानते।

इसी तरह सुरेन्द्र चौधरी भी 'कहानी' पर भारतीय दावा करते हुए कहते हैं– ''भारत में कथा और आख्यायिका की श्रेण्य और मौखिक परंपरा संस्कृत से लेकर हिंदी प्रेमाख्यानों तक बराबर बनी रही, फिर क्या हिंदी कथा साहित्य के निर्माता में उनका कोई योगदान नहीं है।''[4] इतना अवश्य कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य पर अधिकार केवल हिंदी वालों का नहीं है, अपितु भारत की उन तमाम भाषाओं का समान रूप से अधिकार है, जो किसी न किसी रूप में संस्कृत से विकसित हुईं हैं। अतः केवल हिंदी भाषा के लोगों द्वारा संस्कृत के कथा साहित्य को हिंदी कहानी की पृष्ठभूमि मानना न्याय संगत नहीं हैं। दूसरी बात यह है कि कुछ पात्रों या नामो को लेकर कथा कहना या उनकी प्रशंसा करना आधुनिक कहानी नहीं है, इस प्रकार कुछ एक नाम लेकर बच्चों को सुनाने की परम्परा रही है और यह कोई आज की परम्परा नहीं है, यह परम्परा हर काल, देश में रही होगी पर इसे कहानी नहीं कहा जा सकता। उदहारण के लिए मान लिया जाय कि पाषाण काल में जब मनुष्य वन में शिकार करता होगा तो कुछ ऐसा प्रिय–अप्रिय घटित होता होगा जिसे शिकारी अपने परिवार या कबीले को सुनाते होंगे तो क्या इसे आधुनिक कहानी की मौखिक परम्परा मान लिया जाएगा? समस्या नाम से है हर बात जो सुनाई जाए जिसमें किसी घटना–परिघटना का जिक्र हो उसे अक्सर लोग कहानी कह देते हैं, इसलिए कहानी के अर्थ को समझना होगा। कहानी का अर्थ घटनात्मक विवरण का नाम नहीं अपितु चरित्रांकन और पात्रों द्वारा सजीवता से संवाद करना भी है। इसी तरह हिंदी में कथा का आरंभ चारणकाव्य या मध्यकालीन कथात्मक काव्यों से मानना भी न्याय संगत नहीं है। इस काल की सभी कथाएँ प्रबंधकाव्य के अंतर्गत आती हैं इसलिए हम इन कथाओं को कहानी या उसकी पृष्ठभूमि नहीं कह सकते हैं। ऐसा करना प्रबंधकाव्य की परम्परा को खंडित करना और उसके महत्त्व को करने का प्रयास मात्र होगा। अख्यायिका और कहानी दोनों अलग और पूर्णतः स्वतंत्र हैं। आधुनिक युग में कहानी विधा का जो आरंभ हुआ, वह अंग्रेज़ी की कहानियों की तर्ज़ पर हुआ। अंग्रेज़ी साहित्य में शार्ट स्टोरी लिखी जा रही थी। उपनिवेश होने के नाते भारत में जिस तरह साहित्य की अन्य विधाएँ पश्चिम से आईं, उसी तरह कहानी विधा भी पश्चिम की ही देन है। पश्चिमी तर्ज़ पर ही बंगला और फिर हिंदी में कहानी का आरंभ हुआ इस विषय में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन ध्यान देने योग्य है– ''अंग्रेज़ी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थीं।''[5] यहाँ इस संशय का भी अंत होता है कि बंगला गल्प से हिंदी कहानी का विकास हुआ क्योंकि बांगला गल्प भी पश्चिमी शार्ट स्टोरी से ही प्रभावित है। हिंदी में किस तरह इनका चलन हुआ इस विषय में वे आगे कहते हैं– ''द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे।''[6] इस तरह यह तो निश्चित है कि हम आज जिसे कहानी कह रहे हैं, वह विधा पश्चिम से आई है। इसे कभी आख्यायिका, कभी कथा और कभी कहानी कहा गया। गोपाल राय ने संभावना व्यक्त की है कि अंग्रेजी की शार्ट स्टोरी के लिए श्यामसुंदर दास ने सर्वप्रथम 'आख्यायिका' और 'कहानी' नाम का सुझाव दिया। इस नाम को लेकर भी आरंभिक काल में संशय बना रहा। कोई गल्प कहता तो कोई आख्यायिका कहता था। यह संशय प्रेमचंद के साथ भी बना रहा था। इस विषय में गोपाल राय ने अपनी पुस्तक 'हिंदी कहानी का इतिहास' में उद्धरण दिया है– ''प्रेमचंद ने 1908 में प्रकाशित अपने कहानी संग्रह सोज़ेवतन की भूमिका में पहली बार शार्ट स्टोरी पद के अर्थ में 'कहानी' पद का प्रयोग किया था, पर हिंदी में आने के बाद वे अपनी कहानियों को कभी 'कहानी' कभी 'आख्यायिका' और कभी गल्प कहते रहे। उनकी यह दुविधा उनके जीवन भर बनी रही, जिसका प्रमाण 1936 में प्रकाशित 'मानसरोवर' की भूमिका है।''[7] भारतेन्दु युग से पूर्व लल्लूलाल का 'प्रेमसागर' सदल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान' तथा इंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' जैसे कथात्मक ग्रंथ मिलते हैं। 'प्रेमसागर' पौराणिक कथात्मक ग्रंथ है, जबकि 'नासिकेतोपाख्यान' संस्कृत के नासिकेतोपाख्यान का अनुवाद मात्र है। अब 'रानी केतकी की कहानी' ही ऐसा ग्रंथ बचता है जो न तो अनुवाद है और न ही पौराणिक कथा को ग्रहण किया हुए है। स्वयं इंशा अल्लाह खाँ ने इसे 'कहानी' कहा। इसी कारण शिवदान सिंह चौहान और डॉक्टर रामरतन भटनागर इसे हिंदी की पहली कहानी होने का दावा करते हैं। परंतु यह रचना अपने विशाल कथानक की वजह से कहानी और उपन्यास दोनों की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। पर ध्यान देना होगा कि उस समय तक बल्कि उसके बाद तक शार्ट स्टोरी के नियम तय नही हुए थे। इसी तरह राजा शिवप्रसाद सिंह की रचना 'राजा भोज का सपना' भी कहानी के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो सकी– ''इंशा की रानी केतकी की बड़ी कहानी न आधुनिक उपन्यास के अंतर्गत आएगी, न राजा शिवप्रसाद का 'राजा भोज का सपना' या वीर सिंह का 'वृत्तांत' आधुनिक छोटी कहानी के अन्तर्गत।''[8] हिंदी कहानी के आविर्भाव में 'सरस्वती' पत्रिका का विशेष योगदान रहा है। सरस्वती का प्रकाशन 1900 ई० से आरंभ हुआ। इसके साथ ही इस पत्रिका से आधुनिक हिंदी कहानी का आरंभ भी हुआ। 1900 ई० के जून अंक में किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती' प्रकाशित हुई। आरंभ में इसे ही हिंदी की पहली कहानी माना जाने लगा। यहाँ तक कि आचार्य शुक्ल ने अपने साहित्येतिहास में इसे हिंदी की प्रथम कहानी माना– ''सरस्वती के प्रथम वर्ष (सं 1957) में ही पंडित किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' नाम की कहानी छपी जो मौलिक जान पड़ती है।''[9] इसके अतिरिक्त उन्होंने किशोरी लाल गोस्वामी की 'गुलबहार (1902)', मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुड़ैल (1902)', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय (1903)', गिरिजादत्त वाजपेई की 'पंडित और पंडितानी (1903)' तथा बंग महिला की 'दुलाईवाली (1907)' का भी वर्णन अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में किया है। आचार्य शुक्ल आगे लिखते हैं– ''इनमें से यदि मार्मिकता की दृष्टि से भावप्रधान कहानियों को चुने तो तीन मिलती हैं– 'इंदुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय', और 'दुलाईवाली'। यदि 'इंदुमती' किसी बँगला कहानी की छाया नहीं है तो हिंदी की यही पहली मौलिक ठहरती है। इसके बाद 'ग्यारह वर्ष का समय' फिर दुलाईवाली का नंबर आता है।''[10] एक तरफ वह इंदुमती को पहली कहानी मानते हैं, वहीं दूसरी ओर मार्मिकता की बात करते हुए 'इंदुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाईवाली' का नाम लेते हैं, साथ ही साथ यह भी भ्रम पैदा करते हैं कि यदि 'इंदुमती' किसी कहानी की छाया न हो। इस बात को आधार बनाकर ही सुरेश सिनहा ने शुक्ल जी पर आक्षेप लगाया– ''सुरेश सिन्हा को शुक्ल जी के उपर्युक्त कथन में चालाकी की गंध आती है कि वे इंदुमती को अनुदित करार देकर अपनी कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।''[11] हजारी प्रसाद द्विवेदी और भगवती प्रसाद वाजपेयी 'दुलाईवाली' को पहली कहानी मानते हैं, जबकि शिवदान सिंह चौहान और रामरतन भटनागर 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम कहानी मानते हैं। अगर 'इंदुमती' पर लगे आरोपों को ध्यान में रखकर शुक्ल जी की मार्मिकता और भावप्रधान वाली बात पर ध्यान दिया जाए तो हिंदी की पहली कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' ठहरती है। यही नहीं लक्ष्मीनारायण लाल ने भी पहली मौलिक कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' को माना है– ''सरस्वती के ही तीसरे ही वर्ष मौलिक हिंदी कहानी का आरंभ हुआ, शिल्पविधि की दृष्टि से प्रथम हिंदी की मौलिक कहानी है, रामचंद्र शुक्ल कृति 'ग्यारह वर्ष का समय'।''[12] इसके साथ ही माधवराव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी

भर मिट्टी' की भी प्रथम कहानी के रूप में बाद में चर्चा हुई। यह कहानी 1901 में 'छत्तीसगढ़ मित्र' में प्रकाशित हुई। परंतु इसकी चर्चा तब हुई जब यह पुनः 'सारिका' में प्रकाशित हुई। इस कहानी को गोपाल राय हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी मानते हैं– ''इस प्रकार 'संवेदना के क्षण' की अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की प्रथम कहानी के रूप में मान्यता दी जा सकती है।''[13] हिंदी की पहली मौलिक कहानी किसे माना जाए, इस सम्बंध में विद्वानों ने अलग–अलग अपनी रुचि के अनुसार ही मत व्यक्त किए हैं। यहाँ तक कि काल–क्रम तक का ध्यान नहीं रखा गया। यही कारण है कि राजेन्द्र यादव ने 1915 ई० में प्रकाशित 'उसने कहा था' को हिंदी की पहली कहानी मान लिया। जबकि उसी समय प्रेमचंद की कहानियाँ भी हिंदी में प्रकाशित हो चुकी थीं। प्रकाशन वर्ष के आधार पर देखा जाए तो हिंदी की प्रथम कहानी 'इंदुमती' है। परंतु वह मौलिक न होकर छाया मात्र है– '''इन्दुमती' को प्रथम हिंदी कहानी मानने पर आपत्ति इस आधार पर की जाती है, जो संगत भी है, कि यह मौलिक न होकर शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'टेम्पेस्ट' की छाया है।''[14] शुक्ल जी की 'मार्मिकता की प्रधानता' और गोपाल राय की 'संवेदना के क्षण' तथा प्रकाशन वर्ष को आधार बनाकर यदि हम विचार करें तो हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को मान लेना चाहिए। इसका कारण इस कहानी का प्रकाशन वर्ष भी है। लेकिन एक बात जो महत्त्वपूर्ण है कि कहानी की टेकनीक पर यह कहानी फिट नहीं बैठती। इसके साथ ही इंशा अल्लाह खां की रानी केतकी की कहानी जिसे विशालता के कारण कहानी कहने से इंकार कर दिया गया उसी आधार पर 'एक टोकरी भर मिट्टी' अपने लघुरूप के कारण भी कहानी विधा प्रतीत नहीं होती है। यह कहानी ही नहीं बल्कि उसके बाद की कहानी भी आधुनिक कहानी प्रतीत नहीं होती हैं। टेकनीक और भाव को आधार बनाकर ही राजेन्द्र यादव ने 'उसने कहा था' को पहली कहानी माना है। क्योंकि यह कहानी भाव और शिल्प दोनों के आधार पर आधुनिक है। परंतु हमें यह भी ध्यान देना चाहिये कि वह कहानी का शैशव काल था। इस अवस्था में पूर्ण विकसित शिल्प और भाव की कहानी नहीं हो सकती है। सभी विद्वानों को ध्यान में रखकर कह सकते है कि हिंदी की प्रथम कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' है। यदि फिर भी इसके लघु आकर के कारण इस कहानी को पहली लघुकथा के रूप में स्थापित किया जाएगा, तब फिर हिंदी की प्रथम कहानी के रूप में 'रानी केतकी की कहानी' को स्थापित करना पड़ेगा।

निष्कर्ष

उपस्थित अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य में कथा की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है, किंतु आधुनिक हिंदी कहानी का शिल्प, संरचना और प्रभाव–पद्धति पारंपरिक कथा–साहित्य से भिन्न है। वेद, उपनिषद, पुराण, जातक कथाएँ और संस्कृत कथा–संग्रह कथात्मक तत्त्वों से युक्त अवश्य हैं, परंतु आधुनिक कहानी की एकात्मकता, मनोवैज्ञानिक गहराई और संक्षिप्त शिल्प वहाँ पूर्ण रूप में नहीं मिलते। आख्यायिका और कहानी दो अलग और स्वतंत्र विधाएँ है एक आज भी अत्यंत प्रचलित विधा है तो दूसरी की उपेक्षा की गई।

आधुनिक हिंदी कहानी का व्यवस्थित विकास पश्चिमी 'शार्ट स्टोरी' और बंगला 'गल्प' के प्रभाव से हुआ, जिसे हिंदी की पत्र–पत्रिकाओं—विशेषकर 'सरस्वती'—ने मंच प्रदान किया। प्रथम हिंदी कहानी को लेकर विद्वानों में मतभेद रहे हैं, परंतु प्रकाशन काल, संवेदना, शिल्प और मौलिकता के आधार पर 'एक टोकरी भर मिट्टी' को प्रथम मौलिक हिंदी कहानी मानना अधिक संगत प्रतीत होता है, यद्यपि यह भी कहानी के शैशव चरण का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी का स्वरूप पश्चिम से प्रेरित होते हुए भी भारतीय कथा–धारा की पृष्ठभूमि पर विकसित हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1. हिंदी कहानी: उद्‌भव और विकास – डॉ सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृ 156
2. हिंदी कहानियों की शिल्प–विधि का विकास– डा० लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, पृ० 14
3. वही पृ 16
4. हिंदी कहानी प्रक्रिया और पाठ– सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ० 18
5. हिंदी साहित्य का इतिहास– रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, पृ० 345
6. वही पृ० 345
7. हिंदी कहानी का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008, पृ० 345
8. हिंदी साहित्य का इतिहास , पृ० 345
9. वही, पृ० 345–346
10. वही, पृ० 345
11. हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय– डा० वेद प्रकाश अमिताभ, गिरनार प्रकाशन महेसान उ० गुजरात, प्रथम संस्करण, पृ० 20
12. हिंदी कहानियों की शिल्प–विधि का विकास– डा० लक्ष्मीनारायण लाल, पृ० 57
13. हिंदी कहानी का इतिहास– गोपाल राय, पृ० 48
14. वही, पृ० 16